वैश्वीकरण का नातेदारी पर पड़ने वाले प्रभावों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रीना आर्य[1], डॉ. तेज बहादुर सिंह[2]

[1]शोध छात्रा, सी.एस.जे.एम यूनिवर्सिटी, कानपुर
[2]पी.पी.एन.कॉलेज, कानपुर

अनुरूपी लेखक: रीना आर्य, शोध छात्रा, सी.एस.जे.एम यूनिवर्सिटी, कानपुर
ईमेल: drreenaarya.kanpur@gmail.com

ABSTRACT

'वैश्वीकरण' भारतीय समाज के सभी क्षेत्रों व वर्गों को भाँति–भाँति से प्रभावित कर रहा है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय सामाजिक ढ़ांचे में अनेक परिवर्तन आए हैं। इसका प्रभाव विभिन्न संस्थाओं यथा: परिवार, विवाह, नातेदारी, धर्म, शिक्षा तथा जाति प्रथा पर पड़ा है। इसलिए ऐसी स्थिति में वस्तुस्थिति व वास्तविकता जानने के लिए 'वैश्वीकरण का प्रमुख सामाजिक संस्था नातेदारी पर' प्रस्तुत शोध–अध्ययन एक लघु प्रयास है। तथ्य–संकलन में मुख्य पद्धति के रूप में ''साक्षात्कार–अनुसूची'' तथा ''क्षेत्रीय सर्वेक्षण'' को अपनाया गया है। अध्ययन किए गए कुल ३०० सूचनादाताओं में से नातेदारी प्रथा पर वैश्वीकरण के प्रभाव के सम्बन्ध में; २९: सूचनादाताओं की मान्यता है कि प्रभाव सकारात्मक पड़ रहा है । बहुसंख्यक (९६:) सूचनादाताओं ने यह स्वीकार किया है कि वैश्वीकरण के नातेदारी प्रथा पर पड़ रहे उभय संज्ञा शब्दों का समाज में प्रचलन बढ़ा है। ९०: सूचनादाताओं ने बताया है कि कुछ वर्ष पहले परिहास सम्बन्धों का पालन पूरी तरह किया जाता था लेकिन जैसे– जैसे वैश्वीकरण प्रक्रिया बढ़ रही है प्रभाव स्वरूप अब परिहार सम्बन्धों का पालन नहीं किया जा रहा। जैसे जैसे वैश्वीकरण–प्रक्रिया बढ़ रही है वैसे–वैसे नातेदारी सम्बन्ध कुछ प्रगाढ़ होते जा रहे हैं तो कुछ समाप्त होते जा रहे हैं।'' यह निर्विवाद सत्य है कि भारतीय समाज पर वैश्वीकरण के प्रभाव सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के पड़ रहे हैं।

Key words: नातेदारी, शोध–अध्ययन, वैश्वीकरण, भारतीय समाज

भूमिका

वैश्वीकरण ने विश्व के समस्त देशों विशेषतया विकासशील देशों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। भारत भी उनमें से एक है। वैश्वीकरण के फलस्वरूप भारतीय समाज में भी तीव्र गति से परिवर्तन दिखायी दे रहा है। 'वैश्वीकरण' भारतीय समाज के सभी क्षेत्रों व वर्गों को भाँति–भाँति से प्रभावित कर रहा है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय सामाजिक ढ़ांचे में अनेक परिवर्तन आए हैं। इसका प्रभाव विभिन्न संस्थाओं यथा: परिवार, विवाह, नातेदारी, धर्म, शिक्षा तथा जाति प्रथा पर पड़ा है। इसने भारतीय संस्कृति, जीवन–मूल्यों, प्रतिमानों तथा जीवन शैली सभी को प्रभावित किया है।

अध्ययन–समस्या :

प्रस्तावित अध्ययन की समस्या 'वैश्वीकरण का प्रभाव' हैं। इस विषय के गहन विश्लेषण हेतु विभिन्न आयामों के परिप्रेक्ष्य में उभरती हुई समस्याओं की चर्चा की गयी है, जो निम्नवत् है :

(१) क्या वैश्वीकरण ने प्रमुख सामाजिक संस्था नातेदारी पर प्रभाव डाला है?

Quick Response Code:

www.oijms.org.in

अध्ययन का उद्देश्य

(१) वैश्वीकरण का प्रमुख सामाजिक संस्था नातेदारी पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

इसलिए ऐसी स्थिति में वस्तुस्थिति व वास्तविकता जानने के लिए 'वैश्वीकरण का प्रमुख सामाजिक संस्था नातेदारी पर' प्रस्तुत शोध–अध्ययन एक लघु प्रयास है।

अध्ययन–क्षेत्र

'अध्ययन–क्षेत्र' रूप में उत्तर प्रदेश का जनपद औरैया 'समग्र' चुना गया है जो शोध की दृष्टि से न अधिक विस्तृत है, और न अधिक सीमित; अपितु उचित तथा उपयुक्त है। यह एक नवसृजित जनपद है; जिसमें कुल तीन तहसीलें (औरैया, बिधूना तथा अजीतमल) और सात विकासखण्ड (सहार, बिधूना, अजीतमल, भाग्यनगर, अछल्दा, औरैया तथा एरबाकटरा) हैं। जनपद की कुल जनसंख्या (वर्ष २०११ के अनुसार) १३,७९,५४५ (७४००४० पुरूष, ६३९५०५ महिलाएं) हैं जिसमें नगरीय जनसंख्या २,३४,२०५, शेष ग्रामीण है। सात विकासखण्डों में से तीन विकासखण्ड (भाग्यनगर, सहार, अच्छल्दा) ''संयोग निदर्शन की लाटरी विधि'' से चुनकर; प्रत्येक विकासखण्ड से २–२ ग्राम पंचायतें अर्थात् कुल ६ ग्राम पंचायतें चुनकर; चयनित ग्राम पंचयतों के कुल ५९९६ परिवारों में से ५: निदर्श–चयन के अनुसार २९९.८ अर्थात् ३०० परिवार चुनकर;

इन परिवारों के कर्ताओं/मुखियाओं को अध्ययन की इकाई (सूचनादाता) मानकर प्राथमिक तथ्य संकलित किए गए हैं। इस प्रकार यह किया गया अध्ययन प्रकृति की दृष्टि से ''सूक्ष्म आनुभविक समाजशास्त्रीय'' है।

पद्धति शास्त्र

तथ्य–संकलन में मुख्य पद्धति के रूप में ''साक्षात्कार–अनुसूची'' तथा ''क्षेत्रीय सर्वेक्षण'' को अपनाया गया है। प्राथमिक तथ्य संकलित करने से पूर्व अनुसूची की वैधता तथा सार्थकता की जाँच 'पायलट सर्वे' द्वारा की गयी तत्पश्चात् 'व्यक्तिगत साक्षात्कार' तथा 'अवलोकन' करते हुए प्राथमिक तथ्य प्रचुर व समुचित मात्रा में संकलित किए गए हैं। तदुपरान्त साँख्यकीय विधि से तथ्यों का वर्गीकरण एवं साँख्यकीय विश्लेषण कर तत्सम्बन्धित निष्कर्ष स्थापित किए गए हैं। अध्ययन को तार्किक रूप देने के लिए शोध–परिकल्पनाओं की सत्यता तथा सार्थकता के परीक्षण भी किए गए हैं।

प्रो० एम०एन० श्रीवास्तव' का कथन प्रासंगिक ही है कि ''क्षेत्रीय अध्ययन ही सामाजिक अनुसन्धान की आत्मा है।'' उक्त तथ्यों के आलोक में निष्कर्ष है कि वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ है।

परिणाम

'नातेदारी प्रथा' पर वैश्वीकरण के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए सर्व प्रथम सभी ३०० सूचनादाताओं से पृथक–पृथक तौर पर सर्वेक्षण के समय प्रश्न पूछा गया कि : ''वैश्वीकरण से नातेदारी प्रथा पर पड़ रहे प्रभावों के बारे में आप कैसी अनुभूति करते हैं? सकारात्मक/नकारात्मक/दो तरह की।''

तालिका नं. १ : नातेदारी प्रथा पर वैश्वीकरण का प्रभाव

क्रम	नातेदारी प्रथा पर प्रभाव	सूचनादाताओं की संख्या	प्रतिशत
१	सकारात्मक	८७	२९.००
२	नकारात्मक	७८	२६.००
३	दोनों प्रकार का	१३५	४५.००
	समस्त	३००	१००.००

प्रस्तुत तालिका नं. १ के तथ्यों के विश्लेषण के प्रकाश में स्पष्ट है कि अध्ययन किए गए कुल ३०० सूचनादाताओं में से नातेदारी प्रथा पर वैश्वीकरण के प्रभाव के सम्बन्ध में; २९: सूचनादाताओं की मान्यता है कि प्रभाव सकारात्मक पड़ रहा है, जबकि २६: सूचनादाता वैश्वीकरण से नातेदारी प्रथा पर पड़ रहे प्रभाव को नकारात्मक मानते हैं किन्तु सर्वाधिक ४६: सूचनादाताओं ने दोनों प्रकार (सकारात्मक तथा नकारात्मक) प्रभाव पड़ना स्वीकार किया है।

तालिका नं. २ : नातेदारी सम्बन्धों पर वैश्वीकरण का प्रभाव

क्रम	जैसे–जैसे वैश्वीकरण –प्रक्रिया बढ़ रही है (नातेदारी सम्बन्धों पर प्रभाव)	सूचनादाताओं के अभिमत (आवृत्ति/प्रतिशत)				समस्त (प्रतिशत)
		हाँ	नहीं	उदासीन	अनुत्तरित	
१	कुछ वर्ष पहले परिहार सम्बन्धों का पालन पूरी तरह किया जाता था, लेकिन अब परिहार सम्बन्धों का पालन नहीं किया जा रहा है	२७०(९०.००)	–	३०(१०.००)	–	३००(१००.००)
२	परिहास सम्बन्धों पर वैश्वीकरण का अधिक प्रभाव नहीं पड़ा है; यह सम्बन्ध पहले की अपेक्षा अधिक प्रगाढ़ हुए हैं	२८२(९४.००)	–	१२(०४.००)	०६(०२.००)	३००(१००.००)
३	'माध्यमिक सम्बोधन' समाप्त होते जा रहे हैं	२१५(७१.६७)	१८(०६.००)	६२(२०.६७)	०५(०१.६६)	३००(१००.००)

४	'मातुलेय सम्बन्धों' का महत्व घटा है	१८०(६०.००)	३९(१३.००)	८१(२७.००)	१२(०४.००)	३००(१००.००)
५	'पितृष्वश्रेय सम्बन्धों' का भी महत्व कम हुआ है	१७८(५९.३३)	६३(२१.००)	४७(१५.६७)	१२(०४.००)	३००(१००.००)
६	'सह प्रसविता/सहकश्टी' प्रथा (लगभग) समाप्त है क्योंकि अब अधिकांषत: प्रसव 'नर्सिंग होम्स' (अस्पतालों) में कराए जाते हैं। पूर्व में यह प्रथा काल्पनिक आधार पर की जाने वाली अन्धविष्वासी धारणा थी; आज पूर्णत: तकनीकी वैज्ञानिक युग है	२८०(९३.३३)	—	२०(०६.६७)	—	३००(१००.००)

(नोट— कोश्ठकों के अन्तर्गत प्रदर्शित तथ्य प्रतिशतताएं दर्शाते हैं)

प्रस्तुत तालिका नं. २ के तथ्यों के विश्लेषण के प्रकाश में स्पष्ट है कि वैश्वीकरण ने ''नातेदारी प्रथा'' को प्रभावित किया है; ९०: सूचनादाताओं ने बताया है कि कुछ वर्ष पहले परिहास सम्बन्धों का पालन पूरी तरह किया जाता था लेकिन जैसे— जैसे वैश्वीकरण प्रक्रिया बढ़ रही है प्रभाव स्वरूप अब परिहार सम्बन्धों का पालन नहीं किया जा रहा; जिसे सूचनादाताओं ने उत्तरोत्तर बढ़ती शिक्षा तथा आधुनिकीकरण का प्रभाव माना है

तालिका नं. ३ : उभय रूप में प्रयोग किए जाने वाले ''नातेदारी—सम्बन्ध'' जो वैष्वीकरण के प्रभावस्वरूप चलन में हैं

क्रम	उभय शब्द ;ब्वउउवद ॅवतकद्ध	जिसका प्रयोग ''के लिए'' चलन में है/ नातेदारी सम्बन्ध	सूचनादाताओं के अभिमत/स्वीकारोक्ति (आवृत्तियाँ/ प्रतिशत)			समस्त (प्रतिशत)
			हाँ	नहीं	उदासीन	
१	अंकल ;न्दबसमद्ध	चाचा, मामा, मौसा, फूफा, ताऊ इत्यादि	२९० (९६.६७)	— (००.००)	१० (०३.३३)	३०० (१००.००)
२	ब्रदर ;ठतवजीमतद्ध	सगे भाई, चचेरे, ममेरे, फुफेरे भाई व अन्य समाज के समलिंगी भाई	२८८ (९६.००)	— (००.००)	१२ (०४.००)	३०० (१००.००)

प्रस्तुत तालिका ३ के प्राथमिक तथ्यों के विश्लेशण के आलोक में स्पष्ट है कि बहुसंख्यक (९६:) सूचनादाताओं ने यह स्वीकार किया है कि वैश्वीकरण के नातेदारी प्रथा पर पड़ रहे उभय संज्ञा शब्दों का समाज में प्रचलन बढ़ा है।

'नातेदारी प्रथा' पर प्रभाव

भारतीय समाज में 'विवाह एवं नातेदारी' सामाजिक जीवन के आधारभूत स्तम्भ हैं। प्रत्येक समाज के सदस्य विभिन्न प्रकार के सम्बन्धों द्वारा अनेक समूहों के रूप में आपस में (परस्पर) बँधे परन्तु इनमें से सबसे महत्वपूर्ण सम्बन्ध उन व्यक्तियों के साथ होता है जो 'विवाह—बन्धन' और 'रक्त सम्बन्ध' के आधार पर सम्बन्धित रहते हैं। इनमें भी निकट तथा दूर, घनिष्ठ तथा अघनिष्ठ, मधुर तथा कठोर हर प्रकार के सम्बन्धियों का समावेश होता है परन्तु उल्लेखनीय है कि सभी सम्बन्ध सामाजिक अन्त: क्रिया के ही परिणाम होते हैं। इस प्रकार समाज द्वारा मान्यता प्राप्त (समाज—स्वीकृत) सम्बन्धों की श्रंखला को ही नातेदारी (बन्धुत्व/स्वजन) व्यवस्था कहते हैं। जो प्राय: विवाह सम्बन्धी ;।पिदंसद्ध तथा रक्त सम्बन्धी या समरक्तता ;ब्वदेंदहनपदमवनेद्ध होती हैं। चार्ल्स विनिक१८ (१९६०:३०२) ने लिखा है कि नातेदारी व्यवस्था में समाज द्वारा स्वीकृत (मान्यता प्राप्त) वे सम्बन्ध आते हैं जो अनुमानित व रक्त सम्बन्धों पर आधारित होते हैं। परन्तु जैविक दृष्टि से ''नातेदारी'' शब्द से आशय ''आनुवाँशिकता द्वारा बँधे (स्वजनों) सम्बन्धियों से है।'' परन्तु इरावती कार्वे१९ (१९५३:१६) ने नातेदारी (स्वजन/बन्धुत्व) व्यवस्था के दो पक्ष ;पद्ध आन्तरिक ;पपद्ध बाह्य बताते हुए लिखा कि 'रक्त सम्बन्धों की व्यवस्था' नातेदारी का आन्तरिक पक्ष है, तथा 'विवाह सम्बन्धों की व्यवस्था' इसका बाह्य पक्ष है। इस रूप में 'नातेदारी' एक सामाजिक तथ्य है।२० नातेदारी के नियामक

व्यवहारों ;ज्ञपदींपच नेंहमे रू ब्नेजवउेद्ध को 'रीतियाँ या व्यवहार–प्रतिभान ;ठमींअपवनत च्ंजमतदेद्ध भी कहते हैं जिसमें परिहार ;।अवपकंदबमद्धए परिहास ;श्रवापदहद्धए मातुलेय ;।अनदबनसंजमद्धए माध्यमिक सम्बोधन ;ज्मबीदवदलउलद्धए सह प्रसविता/सह–कष्टी ;ब्वनअंकमेद्धए पितृश्वश्रेय ;।उपसंजमद्ध उल्लेखनीय है।२१ सिंह व मिश्रा२२ (२०१७) ने लिखा है कि ''नातेदारी की व्यवस्थान्तर्गत कुछ नातों के लिए दो प्रकार ख्वर्गीकृत ;ब्सेंपपिबंजवतलद्ध तथा विशिष्ट ैचमबपपिबद्ध, की व्यवस्था है। जैसे 'अंकल' शब्द वर्गीकृत है जिसका प्रयोग चाचा, मामा, मौसा, फूफा, ताऊ आदि के लिए प्राय: कर दिया जाता है; तथा ''भाई'' ;ठतवजीमतद्ध शब्द 'विशिष्ट *व्यवस्था*' का है जिसका प्रयोग एकाधिक व्यक्तियों (यथा: सगे भाई, चचेरे, ममेरे, फुफेरे तथा अन्य दूर के समलिंगी के लिए भी भाई/ठतवजीमतद्ध शब्द का प्रयोग करते हैं। ''मदन२३ (२००५) ने लिखा है कि नि:सन्देह; आज, भारतीय समाज न तो अधिक पिछड़ा है; और न अधिक आधुनिक अपितु यह एक प्रगतिशील व विकासोन्मुखी समाज है, जो वैश्विकीकरण, के दौर से गुजर रहा है साम्प्रत; सजातीयता (एकरूपता) के साथ 'एक नए समाज' का सृजन हो रहा है। अन्य प्रमुख सामाजिक संस्थाओं 'विवाह तथा परिवार' के साथ–साथ वैश्वीकरण ने ''नातेदारी प्रथा'' को भी प्रभावित किया है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण ने ''नातेदारी प्रथा'' को भी प्रभावित किया है। कुछ वर्ष पहले नातेदारी सम्बन्धों को विशेष महत्व दिया जाता था किन्तु आज तुलनात्मक कम। जैसे जैसे वैश्वीकरण–प्रक्रिया बढ़ रही है वैसे–वैसे नातेदारी सम्बन्ध कुछ प्रगाढ़ होते जा रहे हैं तो कुछ समाप्त होते जा रहे हैं।'' यह निर्विवाद सत्य है कि भारतीय समाज पर वैश्वीकरण के प्रभाव सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के पड़ रहे हैं।

संदर्भ सूची

१ण रवि राजेन्द्र ; वैश्वीकरण पर टिप्पणी; उद्घृत: नेशनल रैफ्रीड जर्नल ऑफ सोसल साइन्सेज, समाज विज्ञान विकास संस्थान, बरेली, वर्श १९, अंक २, जुलाई–दिसम्बर २०१७, पृश्ठ २१

२ण सिंह ष्यामधर ; भारत में साँस्कृतिक परिवर्तन: अस्मिता एवं वैष्वीकरण, राधाकमल मुकर्जी चिन्तन परम्परा, नेशनल रैफ्रीड जर्नल ऑफ सोसल साइन्सेज, समाज विज्ञान विकास संस्थान, बरेली, वर्श १९, जुलाई–दिसम्बर २०१७, पृश्ठ २३

३ण सासेन सासकिया ; 'वूमेन्स बर्डन : काउन्टर ज्योग्राफीज ऑफ ग्लोबलाइजेशन एण्ड फेमिनाइजेशन ऑफ सरवाइवल; **''जर्नल ऑफ इण्टरनेष्शनल अफेयर्स''** अंक बसन्त, २०००, संख्या २(५३), कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस न्यूयार्क; उद्घृत पूर्वोक्त, पृश्ठ २०

४ण डे संचारी ; ''नीओ–लिबरल ग्लोबल एजुकेशन'' इण्टरनेषनल जर्नल ऑफ साइंसेज एण्ड कल्चर, बॉम्बे (इण्डिया), २००१, पृश्ठ १७

५ण विजय कुमार एस.; इकोनोमिक, सोशल एण्ड कल्चरल इम्पैक्ट ऑफ ग्लोबलाइजेशन ऑन इण्डियन सोसाइटी, प्रस्तुत षोध पत्र, करीमनगर यूनिवर्सिटी, ६–७ मार्च २०१०

६ण नलिनी आर.; इम्पैक्ट ऑफ ग्लोबलाइजेशन एण्ड इट्स इफैक्ट ऑन इण्डियन सोसाइटी, दिसम्बर २०१२, ूएसमहंसेमतअपबमेपदकपंण्बवउध्तजपबसम